प्राचीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास : एक अध्ययन

डॉ. अशोक कुमार*

मानव सभ्यता के विकास के साथ प्राचीन इतिहास का ज्ञान होता है। अतीत के छोर को छूती हुई जितनी दूर तक हमारी दृष्टि जाती है, युग युग की सांस्कृतिक परम्परा हमें दिखाई देती है। अति प्राचीन मानव ने अपनी भावनाओं को मूर्त करने से पहले प्रकृति की शाश्वत क्रीड़ा से भरपूर योग दिया था। सहस्त्राब्दियों तक वह अपने तरह–तरह के उद्वेगों और अन्तर्नुमूर्तियों को प्रकृति के महामहोत्सव में लय करता रहा। ईसा से सहस्त्रों वर्ष पहले ऐतिहासिक परम्परा इतनी अटूट अविच्छिन रही है कि प्रवाह पथ में अगणित प्रभावों को समेटती हुई वृहत् से वृहत्तर बनकर वह अग्रसर होती रही और विक्षेप उपस्थित हुए, तथापि उसका स्रोत कभी, सूखने नहीं पाया। अनेक धर्म और संस्कृतियाँ उसमें आत्मसात होती गईं और कभी उसका पाट इतना विस्तृत था कि आज उसके–छोर का अनुमान करना भी दुस्साध्य कार्य हो गया है।

भारत में सिन्धु उपत्यका की सभ्यता को हम यहाँ की संस्कृति के गठन की सरलतम व्यावहारिक इकाई गान सकते हैं। प्रागैतिहासिक काल में आर्यों के आगमन से पूर्व भारत का मेसोपोटामिया, की प्राचीन सुमेरी, बाबुली और आसुरी सभ्यताओं से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा, यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि किसका किस पर कितना प्रभाव पड़ा। इस मृत सभ्यता के मूल्यवान अवशेषों को देखकर ईंसा से लगभग चार सहस्त्र पूर्व के लोगों का दैनिक जीवन, रहन–सहन, रीति–रिवाज, खान–पान, पहनावा, सौन्दर्य ज्ञान, चिन्तन–पद्धति और युग के विविध दृश्य मूर्तिमान होने लगते हैं।

ईसा से लगभग छः शतक पूर्व की ओर दृष्टिपात करने पर पता चलता है कि धार्मिक दृष्टि से भारत बड़ी ही डवाँडोल स्थिति से गुजर रहा था, तो साहित्यिक दृष्टि से सूत्र ग्रंथों एवं दर्शन की विभिन्न शाखाओं की भूमिका को निर्माण काल और धार्मिक दृष्टि से जैन–बौद्धों के उदय का समय। इस प्रकार यह माना जा सकता है कि भारत का प्राचीन इतिहास मानव की उपलब्धियों और उत्थान–पतन का साक्ष्य है। यह भी कहा जा सकता है कि काल विचार इतिहास का प्रमुख तत्व है।

भारतीय राजाओं द्वारा बनवाये गये अभिलेखों द्वारा भी भारत के ऐतिहासिक तथ्यों का पता चलता है। इस प्रकार भारत की अतीत की स्मरणीय घटनाक्रमों से भी इतिहास पर प्रकाश पड़ता है। प्राचीन काल के ज्ञान ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि भारत प्राचीन काल से अनेक सम्प्रदायों

***एसोसिएट प्रोफेसर, AI.&AS.TS., कॉलेज हिसुआ नवादा (बिहार)**

की जननी रही है। और सभी सम्प्रदायों के आपसी सहयोग से भारतीय गौरवमयी संस्कृति का निर्माण हुआ।

प्राचीन भारतीय साहित्य में भारतीय जनमानस के गौरवगाथा का उल्लेख मिलता है। भारतीय जनमानस के गौरवगाथा का उल्लेख मिलता है। इस प्रकार यह विदित होता है कि प्राचीन इतिहास के तथ्यों, प्रमाणों एवं साक्ष्यों के आधार पर भारतीय सभ्यता का पता चलता है। प्राचीन ग्रंथों रामायण और महाभारत द्वारा उस काल के सामाजिक संरचना का बोध होता है। यह कहा जा सकता है कि वैदिक काल से भारतीय इतिहास में एक सूत्रता है। महाभारत के शान्तिपर्व को इतिहास माना गया है। भृगु, अंगीरा, कश्यप आदि सूत्रों ने प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसी प्रकार बौद्ध विद्वानों ने प्राचीन भारतीय संरचना में बड़ा महत्वपूर्ण योगदान दिया। महावस्तु ललित विस्तार, और बुद्धचरित में भारतीय इतिहास के तथ्य मिले हैं।[1]

मानव जीवन की भाँति संस्कृति के उदय का इतिहास भी बड़ा रहस्यमय, विराट और समृ' है। सांस्कृतिक जीवन में केवल परम्परा और निरन्तरता ही नहीं नवीनता का भी महत्वपूर्ण स्थान है। आरम्भ से ही भारतीय संस्कृति में आत्मसात करने की क्षमता रही है। ऐतिहासिक साक्ष्यों से यह ज्ञात होता है कि जो भी प्रभाव आया इसके खून में समा गया। और इसके अन्तर से ऐसी संस्कृति की धारा बही जो अत्यन्त मौलिक एवं नवीन थी। किसी भी देश की संस्कृति उसकी आध्यात्मिक, वैज्ञानिक तथा कलात्मक उपलब्धियों की प्रतीक होती है। यह संस्कृति उस सम्पूर्ण देश के मानसिक विकास को सूचित करती है। किसी देश का सम्मान तथा उसका अमर–गान उस देश की संस्कृति पर ही निर्भर करता है। संस्कृति का विकास किसी देश के व्यक्ति की आत्मा तथा शारीरिक क्रियाओं के समन्वय एवं संगठन से होता है।

संस्कृति का रूप देश तथा काल की परिस्थितियों के अनुसार ढलता है। भारतीय संस्कृति का इतिहास बहुत विस्तृत है। भारतीय संस्कृति का विकास लगभग पाँच सहस्त्र वर्षों में हुआ और इस संस्कृति ने विविध क्षेत्रों में इतना उच्च विकास किया कि संसार आज भी भारतीय संस्कृति से अनेक क्षेत्रों में प्रेरणा ग्रहण करता है।[2]

संस्कृति और सभ्यता के मूल में चिन्तन विभिन्न माध्यमों से, अभिव्यक्ति के प्रयास से वातावरण एवं उसके मान को प्रभावित एवं उद्वेलित करता रहा है। ऐसा लगता है कि भारतीय संस्कृति के प्राथमिक चरणों में शास्त्रीयता का उद्गम भी लोक मानस से हुआ। इसके साक्षात् प्रमाण हमें प्रागैतिहासिक युग और बाद में सभ्यता के उद्गमकाल, मोहन जोदड़ों और हड़प्पा में मिलते हैं। यह भी कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति वह वृक्ष की तरह सघन छायादार रही है। इसी प्रकार आरम्भ से ही जीवन में सांस्कृतिक चेतना को जगाने और उस चेतना को बनाये रखने में लोक पर्वों की भूमिका रही है। यह आदिकाल से चली आ रही परम्परा है। लोक परम्परा सांस्कृतिक प्रवाह का एक स्तर रही है।

किसी भी देश की संस्कृति उसकी अपनी आत्मा होती है, जो उसकी सम्पूर्ण मानसिक निधि को सूचित करती है। यह किसी एक व्यक्ति के सुकृत्यों का परिणाम मात्र नहीं होती अपितु एवं अनगणित ज्ञात एवं अज्ञात व्यक्तियों के निरन्तर चिन्तन एवं दर्शन का परिणाम होती है। किसी भी देश की काया संस्कृति के आत्मिक बल पर ही जीवित रह पाती है। संस्कृति का आधार है, मन, प्राण व शरीर का संगठन व इनकी विभिन्नताओं में अपूर्व भौतिक समन्वयता पैदा करना। भारतीय संस्कृति महान समुद्र के समान है जिसमें अनेक नदियाँ आकर विलीन होती रही हैं।

राष्ट्र का गौरव और उसकी आत्मा उसकी संस्कृति होती है। भारत के विविध सम्प्रदायों एवं जातियों के आचार–विचार का समन्वयात्मक रूप भारतीय संस्कृति में समादृत एवं समाहित है। भारतीय संस्कृति के इस उदान्त आदर्श के आधार पर भारत विश्व में एक विशिष्ट आदर की दृष्टि से देखा जाता रहा है। जो इतिहास द्वारा प्रमाणित होता है।[3]

भारतीय संस्कृति पुरातनता, धर्मपरकता, आध्यात्मिकता, दार्शनिकता, देव परायणता आदि का निर्देश देती है।

भारतीय संस्कृति का इतिहास देश और काल में अत्याधिक विस्तृत रहा है। लगभग पाँच सहस्त्र वर्षों की लम्बी अवधि में इस संस्कृति ने विविध क्षेत्रों में अपना विकास किया है। संस्कृति भूत, भविष्य और वर्तमान में प्रवाहित होने वाली एक अजस्व धारा है। मन, कम, और वचन ये मानवीय व्यक्ति के तीन गुण हैं। इन्हीं तीनों गुणों के परिणाम स्वरूप विभिन्न संरचनाएँ होती हैं, धर्म, दर्शन, साहित्य एवं अध्यात्म आदि ये मन की सृष्टि हैं। ये सब रचनाएँ मानव मन की संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग हैं। चूंकी भारतीय संस्कृति बहुत विस्तृत है और यहाँ मानव सभ्यता प्रिय रही है। इतिहास बताता है कि भारत ने सभ्यता के क्षेत्र में कितनी उन्नति की। समन्वय, अविच्छिन्नता, सर्वजन हिताय एवं सर्वजन सुखाय के मौलिकता के आधार पर संस्कृति ने भारतीय जीवन को समृद्धि प्रदान किया।

निःसन्देह वृहत्तर भारत की संस्कृति ने दिग्दिगन्तव्यापी विश्व–सभ्यता के छोरों को छूने का प्रयास किया था। संसार को विस्मित करने वाली अलौकिक आध्यात्म विद्या और तत्व–चिन्तन इन दो महान ध्येयों के कारण ही आदि भारतीय 'नानातत्व में एकता' के दर्शन कर सके।[4]

इसप्रकार यदि संस्कृति किसी देश की आत्मा है तो सभ्यता उस देश का तन। मनुष्य ने प्रत्येक काल में अपने विकास के प्रयत्नों से, अपने कार्यकलापों में निपुणता एवं कुशलता, अग्रसरता तथा विस्तीर्णता की परम सीमाओं के प्राप्त करने की चेष्टा की है जिससे उसकी सभ्यता का विकास हुआ है। यही सभ्यता संस्कृति को बल प्रदान करती रही और उसका अंग बन कर उसकी मान्यताओं को निरन्तर आगे बढ़ाती रही है।

हम ईसा पूर्व से चल रहें इस महान देश के ऐतिहासिक क्रम को विच्छिन्न करके उसे एक सर्वथा काल्पनिक राजनैतिक वायुमण्डल में प्रतिष्ठित करने का प्रयास तो कर सकते है, लेकिन इसका आधार अतीत का दर्शन ही हो सकता है। इसी प्रकार प्रश्न उठता है कि क्या हम इस देश सभ्यता से नाता तोड़कर किसी तथाकथित आधुनिक विचार धारा से एकाएक सम्बन्ध जोड़ सकते हैं क्या हम इस देश के इतिहास, संस्कृति और व्यापक राजनीति को समेटकर चलने वाली देश से कटकर अपनी धरती की मूल अस्मिता को वाणी दे सकते हैं। इन तथ्यों पर विचार किया जाए तो यह कहा जा सकता है कि ये सभी प्रश्न किसी भी भारतीय चिन्तक, विचारक, लेखक, संस्कृतिकर्मी और इतिहास द्रष्टा को समान रूप से उद्वेलित करते रहे हैं।[5]

जब हम भारत के प्राचीन इतिहास का सिंहावलोकन करते हैं तो यह आभास होता है कि संस्कृत भाषा में दो महाकाव्य हैं जो अत्यन्त प्राचीन हैं। पहला रामायण तथा दूसरा महाभारत इन दोनों में प्राचीन आर्यावर्त की सभ्यता और संस्कृति, तत्कालीन आचार–विचार एवं सामाजिक अवस्था लिपिबद्ध है। इन दोनों महाग्रंथों में असंख्य चरित्र–नायक विगत हजारों वर्षों से समस्त हिन्दू जाति की यत्न–संचित राष्ट्रीय सम्पत्ति रहे हैं और उसके विचारों एवं कर्त्तव्य अकर्त्तव्य तथा नीति–संबंधी सिद्धान्तों की आधारशिला है।[6]

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि प्राचीन भारत का इतिहास बहुत गौरवशाली रहा है। इसर कारण भारत की सांस्कृतिक परम्परा अविच्छिन्न और दृढ़ रही है। इसी कारण भारत अध्यात्म, धर्म दर्शन के क्षेत्र में विश्व का गुरु रहा है। इतिहास को जातीय तरंगों से निर्मित मानवता का महासागर कहा गया जो तरंगे उद्वेलित, उत्तेजित, उबलती, संघर्षरत, निरन्तर परिवर्तनशील रूप धारण करती हुई, धरातल तक उठती, फैलती और छोटी लहरों को उदस्थ करती हुई शान्त हो जाती है, ऐसा विचार स्वामी विवेकानन्द का रहा है। जो भारत की ऐतिहासिकता गौरवमयी परम्परा को विश्व के परिवेश में देखते रहे हैं।

यह कहा जा सकता है कि इतिहास विकासक्रम की अनिवार्यताओं, स्थिति, घटना आदि की विशिष्ट भूमिका का निर्वाह करता रहा है। इतिहास संस्कृति और सभ्यता की विशाल और शानदार नगरों की, मनुष्य के साहस और साधना की जिन्दगी की पूर्णता की और साथ ही साथ त्याग और वैराग्य की, अच्छे और अड़े दिनों की विकास और ह्रास की जीवन मृत्यु की कहानी है, ऐसा पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने लिखा है।[7]

भारत के इतिहास की एक समृद्धिशाली परम्परा रही है। यह भी कहा जा सकता है कि भारत का इतिहास अपने समयानुकूल परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन होता रहा है, और यह भी अनुभव होता है कि इसके क्रम में बाधाएँ आती रही हैं फिर भी इतिहास से हम प्राचीन कालों का बोध कर सकते हैं। भारत का प्राचीन इतिहास भारत के महान ग्रंथों में प्रतिष्ठापित है, जिनमें सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक

राजनीतिक आदि विषयों पर बहुत ही विस्तृत जानकारी उपलब्ध हैं। प्राचीन भारतीय साहित्य में भारत के गौरवगाथा के बहुमूल्य तथ्य विद्यमान हैं जिनके अध्ययन द्रष्टा हम भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं आर्थिक व्यवस्था का पता लगा सकते हैं। भारत के विभिन्न साहित्यक संदर्भों तथा तथ्यों द्वारा प्राचीन भारतीय इतिहास पर प्रकाश पड़ता है।

इस प्रकार प्राचीन इतिहास के अनेक तथ्यों का सर्वेक्षण करने पर यह ज्ञात होता है कि भारत के ऐतिहासिक संदर्भों को भारत और विश्व के साथ सामंजस्य करके देखने पर यह आभास होता है कि भारत के सांस्कृतिक इतिहास का भारतीय वातावरण में एक सशक्त भूमिका रही है। यह भी माना जा सकता है कि प्राचीन काल में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को इस कारण भी महत्व रहा है क्योंकि भारत में संस्कृति में बहुजन हिताय और बहुजन सेुखाय का महत्व रहा है। इसलिए इतिहास की सामाजिक व्यवस्था कायम करने में अहम भूमिका रही है। और यह भी कहा जा सकता है कि प्राचीन इतिहास के तथ्यों, प्रमाणों एवं साक्ष्यों के आधार पर भारतीय सभ्यता के परिवर्तित होते परिवेश का ज्ञान होता है।

भारत के प्राचीन इतिहास के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि वैदिक काल से वर्तमान काल तक भारतीय इतिहास में तारतम्यता है क्योंकि प्राचीन इतिहास पाण्डुलिपियों में विद्यमान रही है जो भारतीय जीवन के विभिन्न पहलुओं पर हमारा ध्यान आकर्षित करती रही है।[8]

यह भी माना जा सकता है कि भारत का प्राचीन इतिहास एक प्रकार से मानवीय संबंधों का इतिहास है जिसके द्वारा यह जाना जा सकता है कि भारत के अनेक भौगोलिक क्षेत्रों में जीवन्त संस्कृति का अपना अलग रूप होते हुए भी भारत को एकसूत्र में पिरोने की जीजीविषा को क्यों महत्व दिया जाता रहा है। इस पर यह कहा जा सकता है कि भारतीय जनजीवन में धार्मिक एवं आध्यात्मिक चेतना का संचार यहाँ के मनीषियों ने किया और साधु सन्यासियों के प्रयास से सभी भारतीय एक साथ मिलकर जीवन जीने की प्रेरणा ग्रहण करते रहें। भारत के इतिहास में सन्तों की एक विस्तृत परम्परा रही हैं जिनके कारण भारतीय जनमानस को आध्यात्मिक बोध प्राप्त होता रहा।

किसी भी देश या जाति के इतिहास को समझने के लिए उसके अतीत की जानकारी आवश्यक है। अतीत किसी न किसी रूप में वहाँ की बौद्धिक जागृति से संबन्धित रहता है। इस प्रकार की जागृति को आन्दोलन या क्रान्ति की संज्ञा दी जाती है। उदाहरणार्थ भारतीय भक्ति आन्दोलन ने देश की परम्परा के प्रति अरूचि और चिन्तन शक्ति को नई दिशा दी जिससे अनेक राजनीतिक उथल–पुथल के दौरान विकास करने में समाज सक्षम बना रहा। भारत की यह स्थिति विचार तथा चिन्तन का ही परिणाम था। ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि किसी भी युग में धर्म ने समाज को नये ढांचे में ढालने में कितना बड़ा

प्रभावी योगदान प्रदान किया। इस कारण यह कहा जा सकता है कि ऐतिहासिक परिवेश को जाने बिना वर्तमान की कल्पना करना अधिक प्रासंगिक नहीं है।

इसप्रकार यह कहा जा सकता है कि भारत का प्राचीन इतिहाय सभी धर्मो, सम्प्रदायों और जातियों के संघर्षो, उत्थान–पतन और अन्य जीव के पहलुओं को दर्शाता रहा है जो किसी भी देश की अपनी परिस्थित होती रही है। इसलिए यह प्रमाणित होता है कि इतिहास द्वारा हम अपनी सभ्यता और संस्कृति का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। यह भी विदित होता है कि भारत की प्राचीन संस्कृति का बखान ऐतिहासिक संदर्भों द्वारा ही हुआ है।

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि भारत का प्राचीन इतिहास मानवीय सम्बन्धों को महत्व देता रहा है और इतिहास की विज्ञप्तियों द्वारा हमें यह पता चलता है कि मानव जाति ने आपसी वैमनस्य या सौहार्द से किन नीतिगत व्यवहार को अपना कर अपना पतन या विकास, किया, जिसके आधार पर यह कहा गया कि ऐतिहासिक तथ्यों द्वारा भारत के सभी क्षेत्रों, धर्मो, सम्प्रदायों एवं जातियों के उत्थान–पतन का पता चलता रहा है। यह भी माना जा सकता है कि अतीत के विभिन्न दृष्टिकोण से हमें अपने वर्तमान के जीवन शैली का विश्लेषण करने में सहायता मिलती है। इस प्रकार इतिहास हमारे लिए एक ऐसा तथ्य है जो हमें अपने जीवन को दिशा –निर्देश देने में सक्षम है।

व्यक्ति की तरह हर राष्ट्र का एक व्यक्तित्व होता है जिस तरह व्यक्ति अपने मूल से कट कर विकसित नहीं हो सकता। हमारी परम्परा और संस्कृति का इतिहास पाँच हजार वर्ष पुराना हैं मैं यह नहीं कहता कि इसमें विकृतियाँ नहीं आयी होंगी लेकिन जब भी विकृतियाँ आयीं, कोई न कोई सुधारक पैदा जरूर हुआ। यह रूढ़िवादी भी नहीं है क्योंकि जब भी कोई नये विचार आए, उन्हें स्वीकार किया गया।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :–

1. राधा गोविन्द बसाक– आर्कियोलोजिकल सर्वे ऑफ इकडिया रिपोर्ट–19.14.15।
2. अविनाश बहादुर वर्मा भारतीय चित्रकला का इतिहास, नवीन संस्करण– 2000 प्रकाश बुक डिपो, बरेली।
3. सोती वीरेन्द्र चन्द्र कलाकुंज भारती मुद्रक एवं प्रकाशक : गुलशन राय मेहता, लखनऊ पृष्ठ 22।
4. शचीरानी गुर्टू कला दर्शन पृष्ठः 434।
5. केशव चन्द्र वर्मा छायानट, अंक–49 अप्रैल–जून 1989 पृष्ठ–6
6. स्वामीविवेकानन्द मेरा भारत, अमर भारत प्रकाशक : स्वामी ब्रह्मस्थानन्द, नागपुर पृष्ठ– 12।
7. सुमित्रा गुप्ता (पण्डित नेहरू का इतिहास बोध) प्रज्ञा, पृष्ठ –121।
8. जवाहर लाल नेहरू दी डिस्कवरी ऑफ इण्डिया।